Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक23.06.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

जिसने क्रमानुसार तीन जुम्अः जान बूझ कर छोड़ दिए, अल्लाह तआला उसके दिल पर मुहर कर देता है, उसका दिल काला हो जाता है

यदि वास्तकिव ईमान हो तो कभी इन्सान सांसारिक लाभ के लिए अपने जुमओं को क़ुर्बान न करे

रमज़ान में क़ुर्आन करीम की तिलावत की ओर ध्यान और व्यवस्था इस ओर भी ध्यान दिलाने वाले होने चाहिएँ कि अब हमने प्रतिदिन यथावत् रूप से क़ुर्आन करीम के कुछ न कुछ अंश की तिलावत करनी है

रमज़ान के बाद भी हम अपनी इबादतों के स्तर क़ायम रखने वाले हों ताकि हर क्षण अल्लाह तआला कृपाओं के फ़ैज़ पाते रहें

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- रमज़ान का मुबारक महीना आया और तेज़ी से गुज़र भी गया। बावजूद लम्बे दिनों और फिर गर्मी भी ज़्यादा होने के जो लोग मुझे मिले वे यही कहते हैं कि इस बार रोज़ों का अधिक एहसास नहीं हुआ किन्तु केवल इतना ही काफ़ी नहीं कि हम कहें कि रोज़े इस बार विशेष रूप से सरलता पूर्वक व्यतीत हो गए बल्कि हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि हमने अल्लाह तआला के इन बरकत वाले दिनों में क्या प्राप्त किया। अल्लाह तआला जो रमज़ान के महीने में सातवें आसमान से निचले आसमान पर आ जाता है, अपने बन्दों के निकट होकर उनकी दुआएँ सुनता है। अल्लाह तआला जो इन दिनों में रोज़ा रखने वालों का ख़ुदा बदला बन जाता है। अल्लाह तआला जो इन दिनों में शैतान को जकड़ देता है, हमने अल्लाह तआला के इन फ़ज़्लों और उसकी रहमतों से लाभान्वित होने के लिए क्या किया। हमने अल्लाह तआला के आदेशों को मानने और उसकी शिक्षानुसार जीवन व्यतीत करने के लिए पिछली ग़लतियों को छोड़ कर क्या संकल्प किए हैं और किस हद तक अपने अन्दर बदलाव पैदा किए हैं। यदि हमने नमाज़ों में यथावत् रूप से अदायगी केवल रमज़ान के कारण धारण की है तथा बाद में हमने फिर सुस्त हो जाना है तो यह तो अल्लाह तआला के आदेशों पर चलना नहीं है। यदि हमने जुम्ओं में सुनिश्चित रूप से आना केवल रमज़ान के महीने तक ही रखना है तो यह तो अल्लाह तआला के आदेशानुसार चलना नहीं है। यदि हमने क़ुर्आन करीम की तिलावत को केवल रमज़ान के लिए है अनिवार्य समझा है और बाद में इसकी ओर ध्यान नहीं देना तो यह अल्लाह तआला की इच्छानुसार चलना नहीं है। यदि हमने दरूद और ज़िक्र को केवल रमज़ान तक ही सीमित रखना है तो केवल यह बात तो अल्लाह तआला हमसे नहीं चाहता। यदि हमने अपने आचरण तथा अन्य नेकियों को केवल रमज़ान में मजबूरी समझकर करना है तो यह तो अल्लाह तआला हमसे नहीं चाहता। रमज़ान तो आता है एक ट्रेनिंग कैम्प के रूप में। रमज़ान को तो अल्लाह तआला ने इस लिए फ़र्ज़ किया है कि जिन नेकियों को तुम कर रहे हो उनमें और अधिक प्रगति करो तथा प्रत्येक आना वाला रमज़ान जब पूरा हो तो हमें इबादतों और नेकियों की नई सीमाओं और बुलन्दियों पर पहुंचाने वाला हो और फिर हम इबादतों तथा नेकियों के नए और उच्च स्तर क़ायम करने वाले बन जाएँ। अल्लाह तआला तो हमसे निरन्तर नेकियों पर चलने की आशा करता है। अल्लाह तआला ने तो اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ आदेश दिया है कि नमाज़ें क़ायम करो, नमाज़ों को संवार कर अदा करो। अल्लाह तआला ने حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ अर्थात- सारी नमाज़ों तथा विशेष रूप से बीच की नमाज़ की ओर ध्यान दिलाया है। बीच में आने वाली नमाज़ का अभिप्रायः यह है, बीच की नमाज़ अथवा महत्त्व पूर्ण नमाज़, अर्थात नमाज़ का ऐसा समय जब नमाज़ का महत्त्व बढ़ जाता है। प्रत्येक नमाज़ ही अल्लाह तआला ने अनिवार्य घोषित की है और महत्त्व पूर्ण है फिर बीच की नमाज़ का क्यूँ महत्त्व बताया है। इस लिए कि कुछ नमाज़ों के समय इंसान व्यक्तिगत अथवा सांसारिक अभिलाषाओं को प्राथमिकता दे रहा होता है। किसी के लिए फ़ज्र की नमाज़ अदा करना कठिन होता है उस समय उठ कर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ना अल्लाह तआला के निकट अधिक करने वाला होता है तथा वह ही महत्त्व पूर्ण नमाज़ बन जाती है। किसी को अपने काम और कारोबार के कारण ज़ोहर या अस्र की नमाज़ पढ़ना मुशकिल लगता है उसके लिए इस नमाज़ का महत्त्व बढ़ जाता है। इस प्रकार जहाँ संघर्ष करके, प्रयत्न करके

इंसान अल्लाह तआला की ओर आए, अल्लाह तआला उसके प्रयास को भी महत्त्व देते हुए स्वीकार करता है।

अल्लाह तआला ने नमाज़ों के बारे में कई स्थानों पर विभिन्न हवालों से हमें ध्यान दिलाया है, केवल रमज़ान तक ही सीमित नहीं किया बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ों, जुम्ओं और रमज़ान के हवाले से एक ऐसा इरशाद फ़रमाया है जो एक मोमिन को और एक ऐसे व्यक्ति को जो अल्लाह तआला का भय दिल में रखता हो, हर समय सामने रखना चाहिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पाँच नमाज़ें, जुम्अः अगले जुम्अः तक और रमज़ान से अगले रमज़ान तक उनके बीच होने वाले गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है, जब तक कि वह बड़े बड़े गुनाहों से बचता रहे। अतः यहाँ खोलकर बयान फ़रमा दिया कि पाँच नमाज़ें बचाव का साधन बनती हैं उस समय जब इंसान पूरा प्रयास करके पाँच नमाज़े अपने समय पर अदा करे और हर नमाज़ के बीच का जो अन्तर है उसमें गुनाहों से बचने का प्रयत्न करता रहे। यदि छोटी मोटी कमज़ोरियाँ होंगी तो अल्लाह तआला उन्हें क्षमा कर देगा परन्तु शर्त यह है कि नमाज़ समय पर और उसका हक़ अदा करते हुए अदा की जाए। फिर इसी प्रकार प्रत्येक जुम्अः का भी महत्त्व स्पष्ट कर दिया कि जिस प्रकार पाँच समय की नमाज़ फ़र्ज़ है इसी प्रकार जुम्अः भी अनिवार्य है और एक जुम्अः से जुम्अः तक होने वाली छोटी ग़लतियाँ तथा कमज़ोरियाँ और छोटे गुनाह भी अल्लाह तआला माफ़ कर देता है। इसका कोई यह अर्थ भी न समझ ले कि इनके बीच छोटे पाप कर लो, अल्लाह तआला माफ़ कर देगा, नहीं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि मानवीय दुर्बलताओं के कारण कोई ग़लती हो गई है तो नमाज़ों और जुम्ओं में निरन्तर हाज़िरी तथा गुनाहों की माफ़ी की दुआएँ तथा अपने संकल्पों के कारण कि आगे से यह ग़लती नहीं करूंगा, अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देता है।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुम्ओं में औपचारिकता रखने का महत्त्व बयान फ़रमाते हुए फ़रमाया कि जिसने क्रमानुसार तीन जुम्अः जान बूझ कर छोड़ दिए, अल्लाह तआला उसके दिल पर मुहर कर देता है, एक रिवायत में यह भी है कि उसका दिल काला हो जाता है। अतः प्रत्येक जुम्अः के इस महत्त्व को समझना चाहिए। आज रमज़ान का अन्तिम जुम्अः है। कुछ लोग इस महत्त्व के कारण आए होंगे कि रमज़ान का आख़री जुम्अः है इस लिए यहाँ बड़ी मस्जिद में आकर पढ़ लो, अथवा कई बार ऐसे लोग भी आते हैं जो कहते हैं कि आख़री जुम्अः अवश्य पढ़ना है, इस लिए पढ़ लो। अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया कि रमज़ान के जुम्अः पढ़ लो या आख़री जुम्अः रमज़ान का पढ़ लो तो सवाब होगा अपितु प्रत्येक जुम्अः का महत्त्व बताया है। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِن يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब जुम्अः के दिन के एक भाग में नमाज़ के लिए बुलाया जाए तो अल्लाह के ज़िक्र की ओर जल्दी करते हुए बढ़ा करो और व्यापार को छोड़ दिया करो, यह तुम्हारे लिए अच्छा है यदि तुम ज्ञान रखते हो।

अतः मोमिन को यह आदेश है, ईमान का दावा करने को यह निर्देश है कि प्रत्येक जुम्अः की नमाज़ का विशेष प्रबन्ध करो और अपने व्यापार, अपने काम, अपने व्यवसाय छोड़ दो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यदि तुम ज्ञान रखते हो तो तुम्हें पता होना चाहिए कि यह तम्हारे लिए अच्छा है और इसी में बरकत है, इसी के द्वारा तुम्हारे व्यवसाय में बरकत होगी। यदि वास्तविक ईमान हो तो कभी इंसान दुनया के लाभ के लिए अपने जुम्ओं को क़ुर्बान न करे।

जुम्ओं के संदर्भ में यह भी बता दूँ कि जुम्अः पुरुषों के लिए अनिवार्य है यदि महिलाएँ आ सकती हैं तो अच्छी बात है, अधिक प्रतिफल प्राप्त करती हैं, आ जाएँ बेशक और कई बार माँओं के आने के कारण बच्चों में भी जुम्अः पढ़ने की ओर जागरुकता आ जाती है और महत्त्व बढ़ता है परन्तु हर हाल में जुम्अः के लिए मस्जिदों में आना अनिवार्य है तो केवल पुरुषों के लिए है। इस बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निर्देश बड़ा स्पष्ट है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर मुसलमान पर जमाअत के साथ जुम्अः अदा करना ऐसा हक़ है जो वाजिब है अर्थात अनिवार्य है, केवल चार प्रकार के लोगों को छोड़कर, वे हैं गुलाम, बच्चा, औरत और रोगी। जो नौकरी करने वाले हैं उनको उन देशों में अपने मालिकों को बता कर प्रयास करना चाहिए कि जुम्अः के लिए जुम्अः के समय छुट्टी लें। कुछ लोगों ने प्रयास किया और उन्हें अनुमति मिल भी गई और यदि मजबूरी हो तो फिर आस पास जो अहमदी हों तो तीन चार इकट्ठे होकर जुम्अः पढ़ लिया करें। हाँ ईद पर आना प्रत्येक के लिए अनिवार्य है, प्रत्येक महिला, पुरुष और बच्चे के लिए।

अतः आज बड़ी संख्या में लोग जुम्अः के लिए आए हुए हैं इस लिए मैं इस ओर ध्यान दिला रहा हूँ कि पुरुष अपने जुम्ओं की विशेष रूप से व्यवस्था करें। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक रमज़ान से दुसरे रमज़ान के बीच होने वाले गुनाहों की माफ़ी के बारे में फ़रमाया कि अल्लाह तआला एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक होने वाले छोटे गुनाहों को भी क्षमा कर देता है परन्तु यह स्पष्ट रहना चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गुनाहों की माफ़ी के जो साधन बताए हैं वे आप एक क्रम के साथ बयान फ़रमा रहे हैं। पहले नमाज़ फिर

जुम्अः फिर रमज़ान। अतः इस क्रम के अनुसार यह कुधारणा दूर हो जानी चाहिए कि केवल एक वर्ष के बाद रमज़ान की इबादतें ही गुनाहों से माफ़ी का माध्यम हैं बल्कि यह क्रम इस ओर ध्यान दिला रहा है कि नमाज़ों की पाँच समय दैनिक अदायगी अपनी परिधि में लिए हुए सातवें दिन जुम्अः में दाख़िल करके जुम्अः की बरकतों से अंश दिलाएगी और साल भर के जुम्अः रमज़ान में दाख़िल करते हुए रमज़ानुल मुबारक के फ़ैज़ से लाभान्वित करेंगे। रोज़ाना की पाँच नमाज़ें अल्लाह तआला के समक्ष निवेदन करेंगी कि यह तेरा बन्दा केवल तेरे भय तथा तेरे प्रेम के कारण बड़े पापों से बचते हुए पाँच समय तेरी सेवा में उपस्थित होता रहा। प्रत्येक जुम्अः निवेदन करेगा कि तेरा यह बन्दा सात दिन अपने आपको बड़े गुनाहों से बचाते हुए इस रमज़ान में इस आशा के साथ दाख़िल हुआ कि अपनी रहमत और क्षमा और आग से बचाने के दशकों से तू उसे भी लाभान्वित करेगा।

तो अल्लाह तआला जो बड़ा रहीम व करीम है, उनसे लाभान्वित करते हुए इंसान को अपनी रहमत की चादर में ढाँप लेता है और शैतान के हमलों से उसे बचाता है। अतः भाग्यशाली हैं हममें से वे जो इस सोच के साथ अपनी नमाज़ों, जुम्ओं और अपने रोज़ों का हक़ अदा करते हुए अल्लाह तआला की शरण में आने वाले हैं और रमज़ान के इस वातावरण से हर प्रकार से शुद्ध होकर निकलने वाले हैं। ऐसी पवित्रता तो जो सदैव के लिए अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने वाली बनाती है

फिर रमज़ान में विशेष रूप से क़ुर्आन करीम पढ़ने सुनने की ओर ध्यान आकर्षित होता है। अनेक लोग प्रयास करते हैं कि कम से कम क़ुर्आन करीम का एक दौर पूरा कर लें क्यूँकि यह भी सुन्नत है लेकिन साथ ही इस महीने में क़ुर्आन करीम की तिलावत की ओर ध्यान इस ओर भी ध्यानाकर्षित करने वाला होना चाहिए कि अब हमने रोज़ाना औपचारिक रूप से क़ुर्आन करीम के कुछ न कुछ अंश की अवश्य तिलावत करनी है। अल्लाह तआला ने जहाँ नमाज़ों के भिन्न भिन्न समय पर अदा करने की ओर ध्यान दिलाया है उसका महत्त्व बयान फ़रमाया है, वहाँ यह भी फ़रमाया कि وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ-اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجر كَانَ مشهودًا अर्थात फ़ज्र की तिलावत को भी महत्ता दो, यक़ीनन फ़ज्र के समय क़ुर्आन पढ़ना ऐसा है कि इसकी गवाही दी जाती है। अतः क़ुर्आन मजीद का पढ़ना केवल कुछ विशेष दिनों के लिए ही नहीं सीमित किया गया बल्कि नमाज़ों के साथ उसे बयान करके उसका महत्त्व बयान किया गया है। फिर तिलावत के साथ ही उसको समझने की आवश्यकता है, उसका अनुवाद पढ़ने की आवश्यकता है ताकि अल्लाह तआला के आदेशों का भी हमें पता चले और इस ज़माने में तो इसे विशेष रूप से यथावत पढ़ने की आवश्यकता है। जब मुसलमान कहलाने वाले भी उसकी शिक्षा को भूला बैठे हैं। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि जो लोग क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आसमान पर सम्मान पाएँगे, कौन है जो आसमान पर सम्मान न पाना चाहता हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार बार हमें फ़रमाया कि तुम जो मेरी बैअत में आए हो, सदैव इबादतों के द्वारा भी तथा उच्च शिष्टाचार के द्वारा भी अपने भीतर पवित्र बदलाव पैदा करते चले जाओ। आपने एक स्थान पर फ़रमाया कि जब तक इंसान पाक दिल तथा सत्य एवं निष्ठा से समस्त बुरे रास्तों तथा आशाओं के दरवाज़ों को अपने ऊपर बन्द करके ख़ुदा तआला ही के आगे हाथ नहीं फैलाता, उस समय तक वह इस योग्य नहीं होता कि अल्लाह तआला की सहायता व समर्थन उसे प्राप्त हो लेकिन जब वह अल्लाह तआला के द्वार पर गिरता है तथा उससे दुआ करता है तो उसकी यह दशा रहमत और सहायता को आकर्षित करने वाली होती है। ख़ुदा तआला आसमान से उसके दिल के कोनों में झाँकता है और यदि किसी कोने में भी किसी प्रकार की कोई त्रूटि अथवा शिर्क व बिदअत का कुछ अंश देखता है तो उसकी दुआओं और इबादतों को उसके मुंह पर दे मारता है और यदि देखता है कि उसका दिल हर प्रकार के मानसिक स्वार्थ और अंधकार से विशुद्ध है तो उसके वास्ते रहमत के द्वार खोलता है और उसे अपने साए में लेकर उसके पालन पोषण का स्वयं दायित्व लेता है।

अतः यह है वह स्तर जो हमें सदैव प्राप्त करने के प्रयास करते चले जाना चाहिए। हमारी इबादतें सदैव अल्लाह तआला के लिए हों। रमज़ान के बाद भी हम अपनी इबादतों के स्तर क़ायम रखने वाले हों ताकि हर क्षण अल्लाह तआला की छाँव में रहते हुए उसके पालन पोषण से लाभान्वित होते रहें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- तुम उसके समक्ष स्वीकारीय नहीं हो सकते जब तक तुम्हार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष एक न हो, बड़े होकर छोटों पर रहम करो न कि उनका अपमान, और ज्ञानी होकर नादानों को नसीहत करो न कि दिखावे से उनका अपमान, अमीर होकर ग़रीबों की सेवा करो न कि स्वाभिमान से उन पर घमंड। विनाश की राह से डरो, ख़ुदा से डरते रहो, तक़्वा धारण करो, सृष्टि की उपासना मत करो और अपने मौला की ओर झुक जाओ और दुनया से विभक्त रहो और उसी के हो जाओ, उसी के लिए जीवन व्यतीत करो और उसके लिए प्रत्येक अशुद्धता तथा पाप से घृणा करो, क्यूँकि वह शुद्ध है। चाहिए कि प्रत्येक सुबह तुम्हारे गवाही दे कि तुमने तक़्वा से रात बिताई और प्रत्येक शाम तुम्हारे लिए गवाही दे कि तुमने डरते डरते दिन बिताया। दुनया की धिक्कार से मत डरो कि वे धुएँ की भाँति देखते देखते ग़ायब हो जाती हैं और वे

दिन को रात नहीं कर सकतीं बल्कि तुम ख़ुदा की धिक्कार से डरो जो आसमान से नाज़िल होती है और जिस पर पड़ती है उसके दोनों जहानों में जड़ काट देती है। तुम दिखावे के कारण अपने आपको बचा नहीं सकते। क्या तुम उसको धोखा दे सकते हो। अतः तुम सीधे हो जाओ और साफ़ हो जाओ और पाक हो जाओ और खरे हो जाओ तथा तनिक भी तुम्हारा अंहकार शेष है तो तुम्हारे सारे प्रकाश को दूर कर देगा। यदि तुम्हारे किसी पहलू में घमंड है अथवा दिखावा है अथवा अभिमान है अथवा सुस्ती है तो तुम ऐसी चीज़ नहीं हो कि जो स्वीकारीय हो। ऐसा न हो कि तुम केवल कुछ बातों को लेकर अपने आपको धोखे में डालो कि जो कुछ हमने करना था कर लिया क्यूँकि ख़ुदा चाहता है कि तुम्हारे अस्तित्व पर पूरा पूरा इन्क़लाब आवे और तुमसे एक मौत मांगता है जिसके बाद वह तुम्हें जीवित करेगा। तुम आपस में जल्द सन्धि करो और अपने भाईयों के पापों को क्षमा करो क्यूँकि बुरा है वह इन्सान कि जो अपने भाई के साथ सन्धि पर राज़ी नहीं, वह काटा जाएगा क्यूँकि वह अन्तर पैदा करता है। तुम अपनी मानसिकता हर प्रकार से छोड़ दो तथा परस्पर भेद भाव छोड़ दो। सच्चे होकर झूठों की भांति अपमान सहो ताकि तुम माफ़ किए जाओ। फ़रमाते हैं- अहंकार के मोटापे को छोड़ दो, जिस द्वार के लिए तुम बुलाए गए हो उसमें एक मोटा इंसान दाख़िल नहीं हो सकता। क्या ही दुर्भाग्य शाली वह व्यक्ति है जो इन बातों को नहीं मानता जो ख़ुदा के मुंह से निकलीं और मैंने बयान कीं। तुम यदि चाहते हो कि आसमान से तुम पर ख़ुदा राज़ी हो तो तुम आपस में ऐसे हो जाओ जैसे एक पेट में से दो भाई। तुममें से अधिक प्रिय वही है जो अपने भाई के अधिक गुनाह क्षमा करता है तथा अभागा वह है जो हठ करता है और क्षमा नहीं करता तो उसक मुझ में कोई अंश नहीं। आप फ़रमाते हैं- बुरा व्यक्ति ख़ुदा की निकटता प्राप्त नहीं कर सकता, अहंकारी उसकी निकटता प्राप्त नहीं कर सकता, ज़ालिम उसकी निकटता प्राप्त नहीं कर सकता, अन्याय करने वाला उसकी निकटता प्राप्त नहीं कर सकता और प्रत्येक जो उसके नाम के लिए स्वाभिमानी नहीं उसकी निकटता प्राप्त नहीं कर सकता। फ़रमाया- तुम्हारे लिए एक आवश्यक शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को महजूर की भांति न छोड़ो कि तुम्हारा जीवन उसी में है। जो लोग क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आसमान पर सम्मान पाएँगे, जो लोग प्रत्येक हदीस तथा प्रत्येक कथन पर क़ुर्आन को प्राथमिकता देंगे उनको आसमान पर प्राथमिकता दी जाएगी। मानव जाति के लिए अब इस धरती पर कोई किताब नहीं मगर क़ुर्आन, और तमाम आदम ज़ादों के लिए अब कोई रसूल और शफ़ी नहीं मगर मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, सो तुम कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत उस जाह व जलाल के नबी के साथ रखो और उसके ग़ैर को उस पर किसी प्रकार की बड़ाई मत दो ताकि आसमान पर तुम मोक्ष प्राप्त लिखे जाओ और याद रखो कि मोक्ष वह चीज़ नहीं जो मरने के बाद ज़ाहिर होगी, अपितु वास्तविक मुक्ति वह है कि इसी दुनया में अपनी रोशनी दिखलाती है। फ़रमाया- मुक्ति प्राप्त कौन है? वह जो विश्वास रखता है, ख़ुदा सत्य है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसमें और समस्त मानव जाति के बीच शफ़ी हैं और आसमान के नीचे न उसके समान अन्य कोई रसूल है और न क़ुर्आन के समान कोई अन्य किताब है और किसी के लिए ख़ुदा ने न चाहा कि वह सदैव जीवित रहे मगर यह पवित्र नबी हमेशा के लिए ज़िन्दा है।

अतः हममें से प्रत्येक को रमज़ान में से यह संकल्प करते हुए निकलना चाहिए कि जो बातें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहीं और जो बातें हमें खोलकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाईं, उनको हम सदैव सामने रखते हुए उनके अनुसार अपने जीवन व्यतीत करने के प्रयास करें। यदि हम ये करें तभी हम यह कह सकते हैं कि हमने अपने आपको रमज़ान में से अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशानुसार व्यतीत करने का प्रयास किया है। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मोहतरमा मुशताक़ ज़ोहरा साहिबा पत्नि मुकर्रम चौधरी ज़हूर अहमद साहब बाजवह मरहूम ऑफ़ रबवा और मुकर्रम अब्दू बकर साहब ऑफ़ मिस्र की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया और दोनों निधन व्यक्तियों के सदगुण बयान फ़रमाए।

TOLL FREE NO; 180030102131